NAME - SUBHASH CHANDRA GOUTAM
COLLEGE NAME - SHAKUNTALAM INSTITUTE OF TEACHER EDUCATION AT- KRINDIH KUMHAU STATION SHIOSAGAR SASARAM ROHTAS BIHAR 821115

PAPER - F-8 हिन्दी का शिक्षणशास्त्र-1 (प्राथमिक स्तर)

UNIT - 2 D.El.Ed 1st YEAR (2019-2021)

TOPIC- प्राथमिक स्तर की हिन्दी

DATE - 7/06/2020

प्राथमिक स्तर की हिन्दी की पाठ्यपुस्तकें

बच्चा का प्रारंभिक पाठशाला उसका अपना परिवार होता है, और यह प्रारंभिक शिक्षा अनौपचारिक शिक्षा होता है। और जैसे-जैसे बच्चा विद्यालय में प्रवेश करता है, और शिक्षा ग्रहण करता है, तो यह शिक्षा औपचारिक शिक्षा हो जाता है।

प्रारंभिक स्तर की हिन्दी की पाठ्यपुस्तकों में छात्रों के मानसिक विकास, शारीरिक विकास को ध्यान में रखकर पाठ्यक्रम बनाया जाता है। कि छात्रो को विषय से संबंधित ज्ञान प्राप्त हो तथा बालकों को शिक्षा के माध्यम से सम्पूर्ण ज्ञान प्रदान किया जा सके।

हिन्दी की पाठ्यपुस्तको (प्राथमिक स्तर) के अपेक्षित गुण एवं पाठ्यचर्या

① बोधगम्य - बच्चो के स्तरानुसार "समझ में आने लायक" एक आदर्श पाठ्यपुस्तक में बोधगम्य का प्रयोग होना अनिवार्य है। और बच्चे अपने अनुभव बौद्धिक और सहज ढंग से अभिव्यक्त कर सके।

② देखी, सूनी और पढ़ी कहानियों और कविताओं को समझकर उन्हे अपने अनुभवो से जोड़ पाना तथा उन्हे अपने शब्दो में कहना और लिखना।

Scanned with CamScanner

(3) स्पष्टता — प्रारंभिक स्तर की हिन्दी की पाठ्यपुस्तकों की भाषा में स्पष्टता होनी चाहिए, क्योंकि प्रारंभिक स्तर का पाठ्यक्रम छात्रों के स्तर के अनुकूल हो तथा रुची एवं उत्सुकता के अनुसार सिख सके।

(4) चित्रों का प्रयोग — चित्रों को स्वयं की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाना, चित्र दिखाकर बालक को स्वयं ही उस शब्द की अभिव्यक्ति को जानना एवं समझना, चित्र ऊपर या नीचे बना रहता है, उसे देखता और कहता है, बालक देखकर समझने का प्रयास करता है और फिर बोलता है।

इसके प्रयोग से रोचकता, आकर्षण और मनोहरता उत्पन्न होती है। चित्रों के साथ शब्द चित्र बालकों के मानसिक पटल पर छा जाता है।

(5) स्वभाविकता — पाठ्यक्रम में स्वाभाविकता एवं स्पष्ट भाषा का प्रयोग करना चाहिए।

(6) भावो एवं विचारो अथवा पाठ्यवस्तु के प्रस्तुतीकरण में सशक्त भाषा का प्रयोग होना चाहिए। ध्यान रहे भावो एवं विचारो के अनुरूप शब्दो का प्रयोग आवश्यक है।

(7) प्रभावोत्पादकता — प्राथमिक स्तर की पाठ्य-पुस्तकों की भाषा प्रभावोत्पादकता सहित लिखी होनी चाहिए, क्योंकि किसी प्रकार का पाठ्यक्रम हो उसकी अपनी अमिट छाप पढ़ने वाले और पढ़ाने वाले पर बनी रहे कि यदि वह उस पाठ्यक्रम का कुछ अंश ध्यानपूर्वक पढ़ता है तो उसके मस्तिस्क पर उसके अन्दर के कुछ प्रभावी असर छोड़े।

(8) प्रश्नोत्तर — पाठ्यपुस्तक में प्रश्नोत्तर को अनिवार्य आवश्यक है, इससे कक्षा - कक्ष में बालकों को सक्रियता का अनुभव होता है। और बच्चो को भी प्रश्नो पुछने का ज्ञान होना चाहिए। बच्चो ने कहाँ तक कुछ सीखा है इसका ज्ञान भी प्रश्न के माध्यम से ही होता है।

(9) बाल मनोविज्ञान ने यह सिद्ध कर दिया है कि जो विषय एवं क्रियाएँ बच्चे के जीवन से संबंधित होती है, उन्हे बालक आनंदपूर्वक व आसानी से सीख लेता है। यदि प्राथमिक स्तर कि हिन्दी की पाठ्यपुस्तकों को तैयार करते समय बच्चो के दैनिक जीवन से संबंधित उदाहरण आदि को शामिल किया जाए। शिक्षक को चाहिए, कि पढ़ाने के लिए वह जो सामग्री चुने उसका संबंध बालकों के जीवन से हो तथा पाठ्यपुस्तक की सामग्री का संबंध भी बालक के जीवन से अवश्य जोड़े।

अत: बच्चो को उनके खेल - खिलौने, पशु - पक्षी, कथा - कहानी आदि से शिक्षण का संबंध बनाते हुए पढ़ाना चाहिए।

Scanned with CamScanner

प्रश्नों की प्रकृति की समझ

शिक्षण प्रक्रिया के समय शिक्षक छात्रों से प्राय: प्रश्न पूछता है। शिक्षक द्वारा छात्रों से प्रश्न पूछने के अनेक प्रयोजन होते हैं। शिक्षक प्रश्नों के द्वारा छात्रों को अधिगम के लिए प्रेरित करता है, कभी-कभी वह जाँच करता है, कि छात्र विषयवस्तु को समझ रहे हैं या नहीं।

कभी-कभी शिक्षक प्रश्नों के माध्यम से पुनरावृत्ति करता है। तात्पर्य यह है कि प्रश्न शिक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शिक्षक के रूप में विषय से सम्बन्धित और चुनौतीपूर्ण प्रश्नों को पूछने में सक्षम होना सीखना एक महत्वपूर्ण कौशल है, क्योंकि यह विद्यार्थियों के चिन्तन को प्रेरित करता है। और उनके उत्तर आपको उपयोगी जानकारी की एक श्रंखला और इनके ज्ञान तथा वर्त्तमान विचारों की समझ प्रदान करता है। ऐसे प्रश्न पूछना महत्वपूर्ण है जिससे विद्यार्थी सिद्धान्त और अपने अनुभव को जोड़ते हुये खोज कर सकें और स्वयं अपेक्षित हल को निकाल कर बल विषय में गहन समझ विकसित कर सकें।

प्रश्नों की संरचना

- सम्बद्धता (Relevance)
- सटीक (Preciseness)
- स्पष्टता (clarity)
- सही व्याकरण का प्रयोग
- प्रश्नों के स्तर

प्रश्न पूछना

- गति (speed)
- आवाज (voice)
- विराम (pause)
- वितरण (Distribution)

निष्कर्ष :

"उपरोक्त विवेचनाओं के अवलोकन से यह निष्कर्ष निकलता है कि प्राथमिक स्तर पर हिन्दी की पाठ्यपुस्तकों में छात्रों के मानसिक विकास, शारीरिक विकास एवं बच्चों के दैनिक जीवन से सम्बन्धीत पाठ्यपुस्तक हो। एवं कक्षा में प्रश्न का सम्बन्ध सम्प्रेषण से होता है। प्रश्न पूछने की गति, शिक्षक की आवाज, कब, किससे, किस स्तर पर प्रश्न पूछा जाये, यह शिक्षक के विवेक को दर्शाता है।

=

Scanned with CamScanner